International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 18-19

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटको में नारी चेतना

डॉ0 उदारता

असिस्टेंट प्रोफेसर, (हिंदी), के0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

स्वातंत्र्योत्तर युग विभिन्नताओं का युग है | यह युग सिर्फ पुरुष जाति के उत्थान का युग नहीं अपितु नारी उत्थान एंव प्रगति को दर्शाता है | विकास का कोई ऐसा क्षेत्र नही जो नारी से अछूता हो | न सिर्फ भारत में अपितु विश्व में नारी ने अपनी विजय पताका फहरायी है | सन् 1947 के बाद के नाट्य साहित्य पर स्वतंत्रता का विशेष प्रभाव पड़ा है |

नारी के सामने एक विडम्बना रही है कि उसे प्रारंभ से ही हीनद्रष्टि से देखा जाता रहा है युगद्रष्टा तुलसी ने भी उसे अपने कोप भाजन का शिकार बनाया अर्थात उन्होने ने भी.....

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी |
सकल ताड़ना के अधिकारी ||

चाहे उस समय की परिस्तिथियाँ जैसी भी रही हो, लेकिन तुलसी ने नारी को भी नहीं बख्शा | आधुनिक कवि मैथलीशरण गुप्त ने भी नारी को अबला बना दिया –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी |
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ||

उन्होने नारी को अबला बनाकर उसे कमजोर कर दिया | उन्होने यह भी विचार नहीं किया कि यह नारी उस देश की नारी है जिसमे महारानी लक्ष्मी बाई, रानी सारंधा, रानी दुर्गावती जैसी नारियों ने जन्म लिया है फिर नारी अबला कैसे हो सकती है |

वही प्रसाद युग में आकर पुरुष ने नारी को पहचाना उनकी नारी केवल श्रद्धा है –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष श्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में |

लेकिन दिनकर तक आते आते वही नारी स्वच्छन्द मुक्त भोगी अप्सरा बन गई | जो मातृत्व से घृणा करती है जो एक प्रेम के कारण गर्व के कुरूपता सहन नही कर सकती | नारी के काव्य क्षेत्र की यह यात्रा नारी की जीवन की वास्तविक यात्रा है |

युगों - युगों में यात्रा करती हुई नारी समाज में मुख्य नायिका के रूप में अवतरित हुई है | जिस प्रकार हिंदी काव्य, उपन्यास तथा साहित्य में नारी को विभिन्न रूपों में प्रतिपादित किया गया उसी प्रकार, नाटकों में भी नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं |

इक्कीसवीं सदी नारी के प्रगति एवं उत्थान की है | वह हर क्षेत्र में चुनौतियाँ स्वीकार कर रही है वह अपने अधिकारों और कर्तव्यों से भली भांति परिचित है | अब वह पुरुष की दासी नहीं वरन् सहचरी के रूप में कंधे से कन्धा मिलाकर उसका साथ दे रही है | आज उसने अपने अर्धांगिनी शब्द को सार्थक सिद्ध कर दिया है |

1947 के बाद अर्थात स्वात्रंत्योत्तर नाटकों में नारी के परिवर्तित रूप के दर्शन होते हैं | अर्थात नारी पुरानी परम्पराओं का परित्याग कर नए आयाम प्रस्तुत कर रही है आर्थिक तथा बौद्धिक रूप से सक्षम आज की नारी किस प्रकार पुरुष का सामना कर रही है वह पुरुष की दासी न होकर उसकी सहगामिनी के रूप में आगे बढ़ रही है आर्थिक तथा शैक्षणिक सुद्रढ़ता के कारण उसके स्वाभिमान में बढ़ोत्तरी हुई है लेकिन कई बार उसका यही अहं उसके जीवन को कुंठित कर देता है | नारी का यह अहं भी नाटको में द्रष्टिगोचर होता है | अब हमने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाट्य जगत में नारी के स्वरूपों के विविध आयामों में प्रस्तुत किया है हमने अनेक नाटककारों के नाटकों के माध्यम से नारी चेतना के प्रमुख बिन्दुओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है –

डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक 'गंगा माटी' की नायिका गंगा एक सुशिक्षित ब्राम्हण कन्या है वह अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है वह अपनी गुलामी किसी प्रकार सहन नहीं कर सकती तथा गांव की अनेक अबलाओं को उनके अस्तित्व की पहचान कराने आगे बढ़ती है उसी गाँव का एक पुरुष उसे गाँव का कलंक मानता है क्योंकि वह छुआछूत नहीं मानती प्रति उत्तर में गंगा कहती है-

"क्या इस गाँव की स्त्री लोहे की मशीन है जो तुम्हारे यन्त्र – नियम के अनुसार चलेगी ? मै जो सही समझती हूँ, करुँगी |" 'गंगा माटी' की गंगा के चरित्र से छुआछूत की भावना से ऊपर उठने की प्रेरणा मिलती है | अधिकांशत: स्त्रियों में छुआछूत की भावना होती है परन्तु गंगा ब्राह्मण है, फिर भी वह छुआछूत स्वीकार नहीं करती और गाँव की सभी नारियों में चेतना का प्रकाश स्तम्भ स्थापित करती है |

डॉ0 लाल के एक और नाटक 'अंधा कुआँ' में भी एक नारी चरित्र अदम्य साहस का परिचय देती है | 'अंधा कुआँ' का नायक भगोती जब बाँझपन के कारण अपनी पत्नी सूका को मारता पीटता है उसको तिरस्कृत करता है उसकी इस दुर्दशा को उसकी देवरानी सहन नहीं कर पाती | और उसके प्रति हो रहे अत्याचार का विरोध करती है राजी अशिक्षित तथा ग्रामीण होते हुए भी एक सजग नारी के रूप में प्रस्तुत होती है | वह सुका को भगौती के अत्याचारों से बचाना चाहती है इस पर भगौती उससे कहता है – 'देख राजी ! कान पार के सुन,समझ बूझकर घर गृहस्थी में पैर रखना, नहीं गेहूं के साथ घुन भी पिस उठता है इस पर राजी साहस से जेठ का मुकाबला करती है और कहती है – 'तुम भी कान पार के सुनो, मै सूका दीदी नहीं हूँ कि तुम्हारी सहूँ | मै ब्याह कर इस घर में आई हूँ' |

इस प्रकार 'अंधा कुआँ' की 'राजी' का चरित्र समाज में एक नया सन्देश लेकर आता है की भारतीय नारी पर सदियों से हो रहे अत्याचारों को एक नारी ही उसका प्रतिशोध लेकर करती है | इससे ऐसा प्रतीत होता है कि नारी में चेतना का संचार उत्तरोत्तर हो रहा है |

गिरिराज किशोर के नाटक 'प्रजा ही रहने दो' की द्रोपदी जागरूक नारी है जो पथ प्रदर्शिका और प्रेरणा के रूप में अपने पति के सम्मुख प्रस्तुत होती है कुन्ती से आज्ञा लेते हुए वह कहती है –

'मेरी वही सीमा आ गई, जहाँ शील, संकोच, भय सब समाप्त हो जाता है| मुझे आज्ञा दें, मै आपके सोये हुए पुत्रों की आत्मा को पुन: जाग्रत करुँगी | राजा बनने के बाद जिनकी पहचान समाप्त हो गयी थी उसे मै फिर से कराऊंगी' | द्रोपदी अपने अपमान का बदला लेना जानती है | अपनी सास से वह कहती है..... 'स्वर्ण मृग पालने का ऐश्वर्य महारानी सीता के ही अनुरूप था | में यदि कोई स्वप्न पालूँगी तो अपने अपमान के प्रतिशोध का | मेरे चीर हरण के समय कौरवों की स्त्रियां ठठाकर हंस रहीं थीं अब मै रुदन की बानगी भी देखना चाहती हूँ | तब तक मेरा कोई न पति होगा न भाई न ससुर और न सम्बन्ध |' चोट खाई हुई नारी पुर्णतः विद्रोहिणी बन जाती है | उसका सोया हुआ स्वाभिमान जाग्रत हो जाता है प्रस्तुत नाटक से हमे यह सन्देश मिलता है की यदि द्रोपदी की तरह समाज की किसी भी नारी का अपमान किया गया तो वह चुपचाप सहन नहीं करेगी | अपितु उस अपमान का वह बदला लेगी | ऐसा नाटक से प्रतीत होता है कि पुराण काल में भी नारियों में अपने स्वाभिमान के प्रति चेतना का भाव था और आज भी है |

विनोद रस्तोगी ने अपने नाटक 'नये हाथ' में नारी को जन्म जात स्वतंत्र माना है भारतीय नारी की एसी विडम्बना रही है की वह प्रारंभ से ही पुरुष की दासी के रूप में प्रस्तुत हुई है लेकिन ' नए हाथ' की शालिनी नारी को स्वतंत्र तथा पुरुष की हर क्षेत्र से समानता करने वाली मानती है वह किसी की गुलामी नहीं कर सकती | भगवन ने स्वतंत्र पैदा किया है फिर जान बूझकर जंजीरों में क्यों बंधू' प्राचीन कल में नारी का स्थान पुरुष के बाद था उसका मुख्य कारण था आर्थिक असमानता | वह पुरुष की भाँति बाहर निकालने में अक्षम थी, अशिक्षित थी इसका कारण उस पर अनेक अत्याचार व जुल्म ढाए गए परन्तु अब ऐसा नहीं है | समय के बदलते परिवेश में नारी आकाश की ऊँचाईयों को छू रही है | किसी क्षेत्र में वह पुरुष से पीछे नहीं है |

डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक ' मादा कैक्टस' की सुजाता तथा मीनाक्षी स्वाभिमानी युवतियाँ है | सुजाता के अनुसार उसके पति का कथन निम्न शब्दों में व्यक्त हुआ है – 'सुजाता तुम्हारी उपस्थिति मेरी कला के लिए मौत है 'इस पर सुजाता घर छोड़कर चल देती है और अरविन्द को दिखाने के लिए एक प्रोफेसर से विवाह कर लेती है | वह कला समीक्षक बन अरविन्द के सामने प्रस्तुत होती है | अरविन्द के कहने पर कि पुरुष हर क्षण विकास करता है | सुजाता कहती है कि "स्त्री इससे भी ज्यादा तेज है वह बुद्धू से द्रष्टिवान हो सकती है..... आप औरत को सिर्फ मादा समझते है न..... औरत बहुत तेजी से विकास करती है..... वह कुछ भी सह सकती है और कुछ भी नहीं |" मीनाक्षी भी उसकी सच्चाई जानकर उससे विवाह करने से मना कर देती है |

डॉ0 लाल ने 'मादा कैक्टस' के माध्यम से एक नया आयाम प्रस्तुत किया है नाटक में अरविन्द का कहना है की स्त्री का संसर्ग पुरुष को कमजोर बना देता है और उसके विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है | लेकिन आज की विकासशील नारी सुजाता ने यह सिद्ध कर दिया है की यदि पुरुष नारी का संबल न भी बने तो वह विकास के मार्ग से विचलित नहीं होगी अपितु पुरुष का तिरस्कार उसके जीवन में एक नया मोड़ ला देता है|

स्वातंत्र्योत्तर नाटकों में नारी का जहाँ स्वाभिमानी स्वरुप मिलता है वही उसके परिवर्तित जाग्रत , स्वतंत्र जीवन का उत्कृष्ट रूप भी देखने को मिलता है |

एक प्रगतिशील नारी के चेतना को देखकर मन में यह भाव उठा करते हैं

इन चिंगारियों से मत उलझना
नहीं तो तुम भी स्वाहा हो जाओगे
यदि उन्हे जलाओगे
तो क्या तुम बच पाओगे |

इसलिए आवश्यकता है एक अदद प्रगतिशील नारी की जिसका कार्य सिर्फ माँ बनना नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व को प्रगति पथ पर ले जाना है वह है इक्किसवीं सदी की प्रगतिशील नारी- प्रगतिशील नारी |

इस लिए अंत में मै नारी चेतना का आवाहन करती हूँ ताकि समाज में फैली हुई विकृतियों का अंत हो सके और समाज को एक नई दिशा मिल सके | समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामचरितमानस – सुन्दरकाण्ड
2. यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त
3. कामायनी – जय शंकर प्रसाद
4. लक्ष्मी नारायण लाल – गंगा माटी
5. लक्ष्मी नारायण लाल – अँधा कुआँ
6. गिरिराज किशोर – प्रजा ही रहने दो
7. लक्ष्मी नारायण लाल – मादा केक्टस
8. विनोद रस्तोगी – नए हाँथ